DATE 11/4/19
PAGE NO.

पाठ - 1

सूरदास

प्रश्न-उत्तर

प्र०-1 गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उ० गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान बताने के पीछे व्यंग्य है कि उद्धव बड़ा अभागा है जो कृष्ण के प्रेम और सौंदर्य के समीप रहता हुआ भी उस आकर्षण और बंधन से मुक्त है।

प्र०-2 उद्धव के व्यवहार की तुलना किससे-किससे की गई है?

उ० उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल-पुष्प और तेल की मटकी से की गई है। जिस प्रकार कमल जल से ऊपर रहता है और उसकी पत्तियाँ जल के समीप होते हुए भी जल की एक भी बूँद नहीं लगने देती है। दूसरी तरफ तेल की चिकनी मटकी को जल में डाला जाता है तो उसके ऊपर एक भी बूँद नहीं रुकती है। ठीक उसी प्रकार उद्धव

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

व्यवहार में इतना रुखा है कि उस पर कृष्ण के रूपाकर्षण का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

प्र०-3 गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उ०- गोपियों ने उद्धव को उलाहने देते हुए कहा उनका मन निष्ठुर है जिसमे प्रेम का कोई भाव नहीं है। वह कमल की उन पंखुड़ियों के समान है जो जल के पास रहते हुए भी जल को अपना स्पर्श नहीं देती है। वह उस चिकनी मटकी के समान है जो पानी में रहती हुई एक भी बूँद अपने ऊपर नहीं रोक सकी।

प्र०-4 उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेशों ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम कैसे किया?

उ०- श्री कृष्ण गोपियों को छोड़कर मथुरा चले गए। कृष्ण के वियोग में गोपियाँ दुखद जीवन जी रही थी। उन्हें यह आशा थी कि कभी न कभी तो कृष्ण से उनकी भेंट होगी लेकिन जब कृष्ण उद्धव को योग-ज्ञान का संदेश देकर गोपियों के पास भेजते हैं तो गोपियाँ अत्यधिक व्याकुल हो जाती हैं और उनके विरह की अग्नि और प्रचंड हो जाती है। इस प्रकार उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह-अग्नि में घी

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

का काम किया।

प्र०-5 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उ०- उपरोक्त कथन के माध्यम से कृष्ण द्वारा गोपियों के प्रेम की मर्यादा न रखकर उन अबलाओं को योग-ज्ञान को अपनाने की बात कही गई है। 'मरजादा न लही' के माध्यम से गोपियों के इसी प्रेम की मर्यादा न रहने की बात कही गई है।

प्र०-6 कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उ०- कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि हमने कृष्ण से मिलने की अभिलाषा थी।

- गोपियों ने अपनी तुलना उन चीटियों के साथ की है जो गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती हैं और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती हैं।

वे जागते, सोते स्वप्नावस्था में, दिन-रात कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगाती रहती हैं।

प्र०-7 गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है जिनका मन चंचल है और इधर-उधर भटकता है। उद्धव भी योग के संदेश में मन की एकाग्रता का उपदेश देते हैं, परन्तु गोपियों का मन तो कृष्ण के अनन्य प्रेम में पहले से ही एकाग्र है।

योग की आवश्यकता तो उन्हें है जिनका मन स्थिर नहीं हो पता, इसलिए गोपियाँ चंचल मन वाले लोगों को योग का उपदेश देने की बात कहती हैं।

प्र०-8 प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग साधन के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

गोपियों ने योग साधना को निरर्थक बताया है। उनके अनुसार यह उन लोगों के लिए है जिनका मन अस्थिर है परन्तु गोपियों का हृदय तो श्रीकृष्ण के लिए स्थिर है। वे उनकी भक्ति में पूरी तरह से समर्पित हैं। योग ज्ञान उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान है जिसे खाना बहुत ही मुश्किल है।

प्र०-9 गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उ० - गोपियों के अनुसार राजा का धर्म है कि वह प्रजा को ना सताए और प्रजा को अन्याय से बचाए।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

प्र०-10 गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन सा परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उ०- गोपियों को लगता है कि कृष्ण ने अब राजनीति सिख ली है। उनकी बुद्धि पहले से भी अधिक चतुर हो गई है। पहले वे प्रेम का बदला प्रेम से चुकाते थे, परंतु अब प्रेम की मर्यादा भूलकर योग का संदेश देने लगे हैं। कृष्ण पहले दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित थे। इन्हीं परिवर्तनों के कारण गोपियाँ कृष्ण से अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं।

प्र०-11 गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उ०- 'भ्रमरगीत' के माध्यम से सूरदास ने गोपियों के मन की व्यथा को साकार किया है। यहाँ जब उद्धव गोपियों को ज्ञान और योग का उपदेश देते हैं तब गोपियों की यही स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है कि वे श्री कृष्ण के रंग में रंगी हैं, उन्हें योग और ज्ञान नहीं चाहिए। उनके वाक् चातुर्य में हास्य व्यंग्य का पूट है।

उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का पाठ पढ़ाते हैं तो गोपियाँ तीखे व्यंग्य का प्रयोग करती हैं। निर्गुण ब्रह्म की जगह श्री

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

कृष्ण की श्रेष्ठता और महानता को सिद्ध किया है।

प्र०-12 संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएं बताइए।

उ० - संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूरदास की कई विशेषताओं को अंकित किया है। सर्वप्रथम तो व्यंग्य का भाव झलकता है। गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़ती हुई कहती हैं कि उद्धव कभी प्रेम के धागे में बंधे होते तो विरह की वेदना के विषय में जानते।

उन्होंने हारिल पक्षी की लकड़ी के समान कृष्ण के प्रति एक निष्ठ प्रेम का परिचय दिया है और उन्हीं में अपना विश्वास प्रकट किया है। सूरदास ने लोकधार्मिता को दर्शाते हुए राजधर्म को भी याद दिलाया है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera